8

भाषा (हिंदी) की कक्षा में आकलन*

1. भाषा– जीवन से जुड़ी

हम सभी भाषा को शब्दों, वाक्यों और ध्वनियों के व्यवस्थित रूप में पहचानने के इतने आदी हो गए हैं कि अपने आस-पास बिखरी भाषाओं के विविध रूपों को पहचानने और सराहने की ओर ज़रा-सा भी ध्यान नहीं दे पाते। क्या स्कूल की घंटी या गोलगप्पे वाले का तवा हमें पुकारता नहीं है? किसी अजनबी की आहट से हमारी गली का कुत्ता भौंक-भौंक कर हमें आगाह नहीं करता? फिर किसी परिचित को देखकर हमारे चेहरे की मुस्कान बहुत कुछ 'कह' नहीं जाती? अँधेरे में सोते हुए पाँच साल के बच्चे का अपने पास लेटे संबंधी को छूकर महसूस करना क्या 'सुनने' की कोशिश नहीं?

इन सब उदाहरणों के ज़रिए हम केवल भाषा के विविध रूपों की ओर इशारा करना चाहते हैं। भाषा अपनी बात कहने और दूसरों की बात समझने के माध्यमों (के समूह) का नाम है और यह ज़रूरी नहीं कि भाषा शाब्दिक ही हो या उसमें ध्वनियाँ ही हों। सभी प्राणियों में अपनी आवश्यकतानुसार एक-दूसरे से संप्रेषण करने की जन्मजात योग्यता होती है। मानव उन सबसे इसलिए अलग है, क्योंकि वह भाषा का इस्तेमाल केवल संप्रेषण के लिए ही नहीं बल्कि तर्क, कल्पना, विचार और सृजन के लिए भी करता है। मानव का भाषायी विकास उसके 'जन्म' से ही प्रारंभ हो जाता है, और ज़िंदगी भर जारी रहता है। इस विकास में उसके आस-पास के लोग, स्थितियाँ, परिवेश आदि तो महत्वपूर्ण भूमिका निभाते ही हैं, उसका स्वयं का योगदान भी कुछ कम नहीं होता इसीलिए एक ही माँ की दो संतानों की भाषा इतनी अलग हो पाती है। यह इसलिए कि प्रत्येक मस्तिष्क अपने आस-पास की भाषा को ज्यों का त्यों ग्रहण नहीं कर लेता बल्कि उसे परिवर्धित करके उसमें अपने व्यक्तित्व के रंग भर लेता है। इस प्रकार किसी भी भाषा में सामूहिकता के साथ-साथ एक प्रकार की वैयक्तिक विशेषता सदैव मौजूद रहती है। विद्यालय का कार्य इन दोनों विशेषताओं के भरपूर विकास के लिए रोचक और सृजनात्मक वातावरण उपलब्ध करवाना है ताकि विद्यालय में पढ़ने वाले बच्चे किसी फ़ैक्ट्री से निकलने वाले रोबोट न बन जाएँ बल्कि उनमें व्यक्तिगत विशेषताएँ बरकरार रहें।

बच्चे का विद्यालय में दाखिला लेना एक बड़ी घटना मानी जाती है – बच्चे के अभिभावकों के लिए भी, बच्चे के लिए भी और शिक्षकों के लिए भी। पर तीनों के लिए कारण अलग-अलग होते हैं। बच्चे के

*राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा विकसित प्राथमिक स्तर के उदाहरणस्वरूप सी.सी.ई. पैकेज से

लिए यह घटना इसलिए 'बड़ी' हो सकती है, क्योंकि यहाँ उसे नए दोस्त, नए झूले, नया मैदान, नए कपड़े और नयी चीज़ें (जिनमें किताबें, कॉपी आदि शामिल हैं) मिलेंगी। अभिभावकों के लिए यह इसलिए बड़ी घटना बन जाती है, क्योंकि संभवत: पहली बार उनकी संतान इतने समय तक नियमित रूप से बिना उनके सहारे के रहेगी। शिक्षकों के लिए इसलिए यह बड़ी घटना बन जाती है, क्योंकि उनके सामने एक ऐसा 'उत्तरदायित्व' प्रस्तुत हो जाता है जिसे पढ़ने-लिखने की उनसे अपेक्षा की जाती है।

यह उत्तरदायित्व और घटना इतनी महत्वपूर्ण बन जाती हैं कि शिक्षक यह मानने लग जाते हैं कि स्कूल के दरवाज़े में घुसने से पहले बच्चे का जीवन सीखने से रहित था या जो कुछ उसने स्कूल की चारदीवारी के बाहर सीखा, उसका स्कूल की पढ़ाई-लिखाई में कुछ खास फ़ायदा नहीं है। सब कुछ नए सिरे से शुरू करना पड़ेगा।

वास्तविकता कुछ और है। विद्यालय की चारदीवरी में दाखिल होने से पहले के पाँच सालों में बच्चा अपने परिवेश और घर की भाषाएँ बखूबी आत्मसात कर चुका होता है। वह अपनी ज़रूरतों (मुझे भूख लगी है), इच्छाओं (मेरा मन आइसक्रीम खाने का है), कल्पनाओं (कल मैंने शेर देखा था, सच्ची) और राय (ये अच्छा गाना नहीं है) ज़ाहिर करने के लिए हैरान कर देने वाली हद तक भाषा का परिपक्व प्रयोग करता है। वे चुनौती देने (तू मेरे जितना दौड़कर दिखा), तर्क करने (आप भैया को ज़्यादा प्यार करते हो), उदाहरण देने (बर्फ़ काँटे की तरह चुभ रही है), निष्कर्ष निकालने (अँधेरा हो गया, रात हो गई) आदि के लिए भी भाषा का ठीक उसी तरह उपयोग करते हैं जिस तरह बड़े करते हैं, बस दोनों के शब्द भंडार और अनुभव संसार में अंतर होता है। जिस तरह बच्चों के लिए बड़ों के कई शब्द नए होते हैं ठीक उसी तरह बड़ों के लिए भी बच्चों के संसार के कई शब्द नए होते हैं। इससे यह बात तो स्पष्ट हो जाती है कि बच्चों के पास विद्यालय आने से पहले ही अच्छा-खासा भाषायी खज़ाना मौजूद होता है जिसे बच्चा अपनी समझ और अनुभवों के आधार पर सृजित करता है। अब चुनौती इस बात की है कि विद्यालय में कैसे इस खज़ाने को पहचाना, निखारा और सँवारा जाए। इन कामों में आपकी सहायता करेगा सतत् और व्यापक आकलन।

2. भाषा की कक्षा और आकलन

भाषा की कक्षा में आकलन के उद्देश्य हैं– भाषा की समझ, इसे विभिन्न संदर्भों में उपयोग करने की क्षमता और सौंदर्यपरक पहलू परख सकने की क्षमता का मापन कहा जाता है। आकलन – सीखने-सिखाने की प्रक्रिया का अभिन्न अंग है। इसलिए यह आकलन करने से पहले कि बच्चे ने किसी कौशल को प्राप्त किया है या नहीं यह ज़रूर सोच लें साथ ही आपने उस कौशल को प्राप्त करने के लिए बच्चे को बार-बार अलग तरह के अवसर दिए हैं या नहीं। यहाँ पर पहली से पाँचवीं तक की कक्षाओं के लिए आकलन के कुछ मूलभूत बिंदु (संकेतक) आपकी सुविधा के लिए दिए जा रहे हैं जिनमें बच्चे की ज़रूरत के अनुसार बदलाव किया जा सकता है।

आकलन के बिंदु (संकेतक)
कक्षा 1 और 2

1. सुनना-बोलना

- कविता/कहानी/विवरण अकेले या सामूहिक रूप से हाव-भाव सहित सुनाती/सुनाता है।
- कविता/कहानी/विवरण सुनकर बातचीत करती/करता है।
- चित्रों पर विवरण सुनाती/सुनाता है।
- स्वतंत्र रूप से अपनी बात कहता/कहती है।
- सरल मौखिक निर्देशों का पालन करती/करता है।
- सुनी हुई बात पर अपना मत व्यक्त करती/करता है।
- बोलते समय जेंडर सामंजस्य का ध्यान रखती/रखता है।
- दैनिक जीवन/परिचित संदर्भों/कक्षा की गतिविधियों का दो-चार वाक्यों में विवरण देती/देता है।
- संबंधित प्रश्न पूछती/पूछता है।
- हिंदी के शब्दों को सही ढंग से बोलती/बोलता है।

2. पढ़ना-समझना

- पढ़ने के लिए रुचि दिखाती/दिखाता है।
- परिचित शब्दों, नामों को कविता/कहानी/श्यामपट्ट/शब्द कार्ड आदि में पहचानती/पहचानता है।
- शब्दों तथा छोटे-छोटे वाक्यों को सरलता से पढ़ती/पढ़ता है।
- नामों को अनुमान लगाकर पढ़ती/पढ़ता है।
- अर्थ समझ कर पढ़ती/पढ़ता है।
- कविता/कहानी/कार्ड/चित्र में आए शब्दों को सरलता से पढ़ती/पढ़ता है।
- वर्ण पहचान कर उनसे नए शब्द बनाती/बनाता है और पढ़ती/पढ़ता है।
- पुस्तकालय की किताबों में से छोटी कहानी/कविता पढ़ती/पढ़ता है।

3. लिखना

- अक्षर/शब्द मन से लिखती/लिखता है।
- पढ़े हुए शब्दों, नामों को लिखती/लिखता है।
- बोले/सुने हुए प्रश्नों का एक-दो वाक्यों में उत्तर लिखती/लिखता है।
- स्वयं पढ़कर एक या दो वाक्यों के उत्तर लिखती/लिखता है।
- सुनकर लिखती/लिखता है।
- दो-तीन वाक्यों में विवरण लिखती/लिखता है।
- पूरी वर्णमाला क्रम में लिखती/लिखता है।

4. सृजनात्मक अभिव्यक्त

- देखकर और बिना देखे चित्र बनाती/बनाता है।
- कविता/कहानी सुनकर उसके अनुसार चित्र बनाती/बनाता है।
- कविता/कहानी/परिचित घटना स्थिति का अभिनय करती/करता है।
- मिट्टी तथा आस-पास की अन्य सामग्री से चीज़ें बनाती/बनाता है।
- मन से कल्पना करके कहानियाँ/कविता बनाती/बनाता है।

- असमान वस्तुओं के बीच समानता और संबंध ढूँढ़ती/ढूँढ़ता है।

कक्षा 3, 4 और 5

1. सुनना-समझना, सोचकर बोलना

- बात को धैर्य और ध्यान के साथ सुनती/सुनता है।
- कविता/कहानी/विवरण हाव-भाव एवं आवाज़ के उतार-चढ़ाव के साथ सुनाती/सुनाता है।
- क्या, कब, कहाँ, किससे, कैसे और क्यों वाले प्रश्नों के उत्तर पूरे वाक्यों में देती/देता है।
- नाटक एवं संवाद सुनकर प्रमुख तत्व ग्रहण करती/करता है।
- परिचित परिस्थितियों के बारे में बातचीत करती/करता है।
- बोलते समय जेंडर, वचन का सामंजस्य रखती/रखता है।
- हो रहे कार्य के संबंध में क्या, कब, कैसे वाले प्रश्न पूछती/पूछता है।
- दैनिक जीवन में विभिन्न संदर्भों में स्वयं को अभिव्यक्त करती/करता है।

2. पढ़कर समझना, समझकर व्यक्त करना

- परिवेश में उपलब्ध लिखित और मुद्रित सामग्री को पढ़कर समझती/समझता है।
- छोटी सूचनाओं को पढ़कर समझती/समझता है।
- पढ़ी गई सामग्री के प्रमुख तत्व ग्रहण करती/करता है।
- संदर्भ में आए शब्दों का अर्थ समझकर उपयोग करती/करता है।
- पुस्तकालय या अन्य स्रोतों से किताबें लेकर पढ़ती/पढ़ता है।
- पाठ्यपुस्तक और उससे इतर सामग्री की रचनाओं में पायी जाने वाली विविधता को पहचान कर उसकी सराहना करती/करता है।

3. लिखना

- क्यों, कब, कैसे वाले प्रश्नों के उत्तर पूरे वाक्यों में लिखती/लिखता है।
- शब्दों को उपयुक्त दूरी से सीधी लाइन में लिखती/लिखता है।
- अपरिचित शब्दों का श्रुतलेखन करती/करता है।
- छोटा अनुच्छेद, विवरण लिखती/लिखता है।
- अपने सामान्य और विशेष अनुभवों को लिखती/लिखता है।

4. सृजनात्मक अभिव्यक्त

- किसी वस्तु का वर्णन करती/करता है।
- कल्पना व अनुभव से कहानी बनाती/बनाता और आगे बढ़ाती/बढ़ाता है।
- किसी वस्तु के सामान्य उपयोग के अलावा अन्य उपयोग सोचती/सोचता है।
- व्यर्थ सामग्री का इस्तेमाल करते हुए मुखौटे आदि बनाती/बनाता है।
- अभिनय में उनका इस्तेमाल करती/करता है।
- भाषा के सौंदर्य को अनुभव करती/करता है।
- भाषा के सौंदर्य की सराहना करती/करता है।

5. परिवेशीय सजगता

- आस-पास होने वाली घटनाओं के प्रति अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करती/करता है।
- आस-पास मौजूद हालातों के बारे में सवाल करती/करता है।

- आस-पास मौजूद पशु-पक्षियों, पेड़-पौधों तथा लोगों के प्रति संवेदनशीलता का भाव रखती/रखता है।
- चीज़ों के व्यर्थ इस्तेमाल को रोकती/रोकता है।

6. सीखना-सिखाना और आकलन

उदाहरण 1

आम की टोकरी (कविता)

यह कविता पहली कक्षा की पाठ्यपुस्तक रिमझिम 1 से ली गई है। इस कविता में एक लड़की आम बेचने का अभिनय कर रही है।

आम की टोकरी
छह साल की छोकरी,
भरकर लाई टोकरी।
टोकरी में आम हैं,
नहीं बताती दाम है।
दिखा-दिखाकर टोकरी,
हमें बुलाती छोकरी।
हमको देती आम है,
नहीं बुलाती नाम है।
नाम नहीं अब पूछना,
हमें आम है चूसना।

सीखने-सिखाने के बिंदु

- कविता का आनंद लेना।
- सुनने के कौशल का विकास करना।
- बोलने के कौशल का विकास करना।
- अनुमान लगाकर पढ़ना।
- बच्चों को घर की बोली में बात करने का अवसर देना।
- उचित सुर, ताल और लय के साथ कविता पढ़ने के कौशल का विकास करना।
- स्थितियों, बातों, शब्दों आदि का अनुमान लगाना।
- अपनी बात को स्पष्ट करने के लिए तर्क देना।
- शब्दों, चीज़ों आदि का वर्गीकरण और विश्लेषण करना।
- समूह में कार्य करना।
- बच्चे को चित्र बनाने का अवसर देना।
- चित्र और शब्दों द्वारा स्वयं को अभिव्यक्त करना।
- कल्पनाशीलता और सृजनात्मकता का विकास करना।

सीखने-सिखाने की प्रक्रिया

बातचीत

शिक्षिका ने रोज़ की तरह कक्षा में जाने के बाद बच्चों से बातचीत शुरू कर दी। बातों ही बातों में उन्होंने पूछा– "आज सुबह नाश्ते में क्या खाकर आए हो?" बच्चों ने तरह-तरह की चीज़ें बतानी शुरू कीं। बच्चे बताते जाते और शिक्षिका ब्लैकबोर्ड पर लिखती जातीं। उन्होंने कई चीज़ें लिखीं–रोटी, पराँठा, दलिया, ब्रेड, केला, बिस्किट, सेब।

राजू बोला, "मैंने कुछ नहीं खाया।"

शिक्षिका ने पूछा, "क्यों?"

वह बोला, "माँ को तेज़ बुखार था।"

तभी गोकुल ने अपने बस्ते से केला निकाला और कहा, "लो इसे खा लो।"

शिक्षिका ने बच्चों को ब्लैकबोर्ड पर लिखी चीज़ें दिखाते हुए पूछा– "अब बताओ, इनमें से तुम्हारी

वाली चीज़ कहाँ लिखी हैं।" बच्चों ने अंदाज़े से बताना शुरू किया। फिर शिक्षिका ने सभी चीज़ों के नाम पढ़ने के बाद पूछा, "इनमें से फल कौन-कौन से हैं?"

मिली ने कहा, "केला और सेब।"

शिक्षिका ने केला और सेब के नीचे लाइन खींच कर पूछा – "और कौन-कौन से फल तुमने खाए हैं?"

बच्चों ने फलों के नाम बताने शुरू किए, "आम, पपीता, तरबूज़, संतरा, खरबूजा।"

गीता बोली, "मुझे अंगूर अच्छा लगता है।"

उमेश ने कहा, "मुझे आम बहुत अच्छा लगता है। मीठा-मीठा।"

सुहास बोला, "मुझे तो कच्चा आम बहुत अच्छा लगता है।"

शिक्षिका ने पूछा – "किस-किसको आम अच्छा लगता है?" कक्षा में कई बच्चों ने हाथ उठा लिए।

शिक्षिका ने पूछा, "आम को तुम अपने घर की बोली में क्या कहते हो?"* बच्चों ने बड़े उत्साह से बताना शुरू किया। बच्चे बताते जाते टीचर ब्लैकबोर्ड पर लिखती जातीं। तब शिक्षिका बोली, "मुझे भी आम बहुत अच्छा लगता है। आज हम आम के बारे में एक कविता पढ़ेंगे-'आम की टोकरी'। इस कविता में तुम्हारी तरह एक छोटी-सी लड़की आम बेचने का अभिनय/खेल कर रही है।"

इस प्रकार शिक्षिका ने बच्चों से बातचीत करते हुए कक्षा का वातावरण सहज बनाया। उन्होंने बच्चों को अनुमान लगाकर पढ़ने का अवसर दिया। उनकी पसंद के फलों के बारे में बातचीत की। उन्हें अपनी घर की बोली में बातचीत करने का अवसर दिया ताकि कक्षा का हर बच्चा बिना झिझक के सीखने की प्रक्रिया में भाग ले सके।

सीखने-सिखाने के दौरान आकलन

बातचीत के दौरान शिक्षिका बच्चों का अवलोकन भी करती गई। उन्होंने देखा कि –

1. गीता, उमेश, सुहास और मिली उत्साह से बातचीत में भाग लेते हैं।
2. गोकुल बहुत संवेदनशील है। उसने अपने बस्ते से केला निकालकर राजू को दिया।
3. गीता, उमेश, सुहास, मिली, गोकुल, जया ब्लैकबोर्ड पर लिखी अपनी बताई खाने की चीज़ों को अनुमान लगाकर सही बता पाए। कक्षा में लगभग सभी बच्चे अनुमान लगाकर पढ़ने की कोशिश कर रहे थे।
4. अपनी पसंद/नापसंद की चीज़ें बताने में सभी बच्चों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया।

मीनल पहले चुपचाप बैठी थी। पर जब घर की बोली में 'आम' बताने को कहा गया तब सबसे पहले वही बोली। अपने घर की बोली में 'आम' शब्द बताने में सभी बच्चों ने उत्साह दिखाया।

कविता सुनना-सुनाना

शिक्षिका ने उचित सुर, ताल और लय के साथ कविता सुनाई। सुनाते समय उन्होंने देखा कि कविता सुनने में

* राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 में भाषा शिक्षण के दौरान बहुभाषिकता को एक संसाधन के रूप में इस्तेमाल करने की सिफ़ारिश की गई है।

बच्चे आनंद ले रहे थे। शिक्षिका भी कविता का भरपूर आनंद ले रही थीं। इसके बाद शिक्षिका ने बच्चों से कहा, “मैं कविता की एक-एक पंक्ति पढ़ूँगी, तुम मेरे बाद दोहराना।”

बच्चों ने वैसा ही किया।

फिर शिक्षिका ने कहा, “मैं एक पंक्ति पढ़ूँगी, तुम अगली पंक्ति।”

बच्चों ने वैसा ही किया।

फिर शिक्षिका बोलीं, “अब तुम कविता की पंक्ति पढ़ो, मैं दोहराऊँगी।।”

बच्चे पढ़ते और शिक्षिका दोहरातीं। बच्चों ने बड़े जोश और आत्मविश्वास से कविता पढ़ी।

कविता की पंक्तियाँ पढ़ने का कार्य सामूहिक और व्यक्तिगत दोनों तरह से कराया गया।

सीखने सिखाने के दौरान आकलन

शिक्षिका ने देखा कि –

1. वैशाली को छोड़कर सभी बच्चों ने कविता का भरपूर आनंद लिया। उन्होंने वैशाली से बात की तो मालूम हुआ कि वैशाली के पेट में दर्द हो रहा है।
2. तीन-चार बार कविता दोहराने से लगभग सभी बच्चों को कविता याद हो गयी थी। जब बच्चों से पढ़ने को कहा गया, तो उन्होंने पढ़ने की कोशिश की।
3. जया, गोपी और मोना, व्यक्तिगत रूप से कविता नहीं पढ़ सके।

कविता पर बातचीत

कविता सुनाने-दोहराने के बाद शिक्षिका ने कविता पर बातचीत की ताकि बच्चों को कविता समझने में मदद मिले।

बातचीत के दौरान बिंदु रहे –

लड़की आम के दाम क्यों नहीं बता रही होगी?

यदि तुम्हें टोकरी भर आम मिल जाएँ, तो तुम क्या करोगी/करोगे?

आम फलों का राजा है, तो अंगूर क्या है?

आम को फलों का राजा क्यों कहा गया है?

आम फलों का राजा है, तो कच्चा आम क्या है?

आम के अलावा तुम्हें कौन-कौन से फल अच्छे लगते हैं?

आम को किस-किस तरह से खाते हैं। बच्चों ने जवाब दिया, “काट कर, चूस कर।” शिक्षिका ने ब्लैकबोर्ड पर तालिका बनाई –

फल काटकर, चूस कर, छीलकर

इसके बाद बच्चों से पूछा, “अब बताओ, कौन-से फल काटकर खाए जा सकते हैं, कौन-से चूसकर और कौन-से छीलकर?” बच्चे जवाब देते जाते, शिक्षिका फल का नाम लिखती जातीं और तालिका में बच्चों को बुलाकर निशान लगवातीं।

फल काटकर चूसकर छीलकर

- आम
- केला
- अमरूद
- संतरा
- पपीता

बच्चों ने इस गतिविधि में भी उत्साह से भाग लिया। वे अपनी बारी आने पर ब्लेक बौर्ड के पास आते और उनसे पहले यदि किसी बच्चे ने गलत

कॉलम में निशान लगाया है तो पहले उसे ठीक करते, फिर आगे बढ़ते, फिर आगे बढ़ते।

सीखने-सिखाने के दौरान आकलन

शिक्षिका ने देखा कि –

1. गोकुल ने कहा, "यदि मुझे टोकरी भर आम मिल जाएँ तो मैं सारे बच्चों को बाँट दूँगा।"
2. प्रश्नों के उत्तर अनूठी कल्पना से भरे थे। सोनू बोला, "आम फलों का राजा है तो अंगूर सैनिक हैं, क्योंकि वे संख्या में अधिक होते हैं।"
3. जया बोली, "आम बहुत मीठा होता है। इसकी खुशबू भी अच्छी होती है, इसीलिए फलों का राजा है और कच्चा आम राजकुमार है।"
4. शांभवी ने कन्नड़ में कहा, "ननगे बालेहण्णु तुम्बा इष्टा" (मुझे केला कहुत अच्छा लगता है।) अब उसकी झिझक धीरे-धीरे खुल रही है।
5. गोकुल ने केले के आगे तीनों ही कॉलम में निशान लगाया था। जया ने बड़े आत्मविश्वास से पहले केले के आगे 'चूसकर' कॉलम के अंतर्गत लगाए के निशान को मिटाया। फिर उसने आम के आगे तीनों ही कॉलम में ख का निशान लगाया। इसी तरह से गौरी ने भी सौरभ द्वारा अमरूद के आगे 'छीलकर' कॉलम में लगाए ख के निशान को मिटाकर ठीक किया। शिक्षिका ने गौर किया कि बच्चे आपस में एक-दूसरे के सुझावों को बड़ी सहजता से के साथ ले रहे थे।

अभिनय की बारी

शिक्षिका ने कहा, "यह लड़की आम बेचने का खेल/अभिनय कर रही है। चलो, हम भी कुछ इसी तरह के खेल/अभिनय करते हैं।" एक बच्चे ने ठेले में केला बेचने का अभिनय किया, अन्य बच्चों ने केले के दाम पूछे,केले खरीदने का अभिनय किया।

सीखने-सिखाने के दौरान आकलन

शिक्षिका ने देखा कि –

1. गोपाल ने ठेलेवाला बनकर केले बेचे।
2. सूरज, अरुण, आयशा, रीना ने केले के दाम पूछे।
3. रीमा चुपचाप बैठी थी। गोपाल उसके पास गया और पूछता, "केला लेना है।" रीमा ने चुप्पी तोड़ते हुए कहाँ, "हाँ।" रीमा की झिझक कुछ टूटी।
4. शांभवी ने पूछा, "एक केला कितने की है?" तो सूरज ने तुरंत ठीक किया, "शांभवी केला कितने की नहीं, कितने का है ऐसे पूछो।"

आओ लिखें और गिनें

शिक्षिका ने बच्चों से कहा, "कविता में से ऐसे शब्द चुनो जिनमें 'म' आता है और उन्हें अपनी कॉपी में लिखो।"

बच्चों ने कविता में से 'म' वर्ण वाले शब्द छाँटकर लिखने शुरू कर दिए।

शिक्षिका ने बच्चों से पूछा, "तुममें से किस-किस के नाम में 'म' आता है?" उमेश, मिली, मीनल, रीमा, अमर,मोहसिन ने झट से हाथ खड़े किए। शिक्षिका ने एक-एक करके इन सभी बच्चों के नाम ब्लैकबोर्ड पर लिखे।

उन्होंने बच्चों से पूछा कि इनमें 'म' वर्ण कहाँ पर आया है। वे बच्चों को बुलातीं और उनसे 'म' के नीचे रेखा खिचवातीं।

शिक्षिका ने बच्चों को कविता के साथ छपा चित्र दिखाकर कहा, "गिनकर लिखो कि टोकरी में कितने आम हैं?"

*भाषा की पढ़ाई या भाषा का सीखना केवल भाषा की कक्षा तक सीमित नही रहता इसलिए भाषा के पाठ को अन्य विषयों से भी जोड़ा जा सकता है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 भी विषयों के बीच जुड़ाव पर बल देती है।

सीखने-सिखाने के दौरान आकलन

शिक्षिका ने देखा कि –

1. बच्चों ने शब्द छाँटे-आम, दाम, नाम।
2. गीता ने 'हमें' शब्द भी छाँटकर लिखा।
3. सूरज और जया ने आमों की संख्या तो सही गिनी पर 'नौ' के स्थान पर लिखा 'नो।'
4. शांभवी ने सही गिनती की लेकिन उसने भी लिखते समय लिखा 'नव।'

मेरा आम

शिक्षिका ने बच्चों से कहा, "आम तो तुम सबको अच्छा लगता है। अब इस मीठे रसीले आम का चित्र अपनी कॉपी में बनाकर उसमें रंग भरो और चित्र को कोई नाम दो।"

इस गतिविधि में बच्चों ने बहुत आनंद लिया।

सीखने-सिखाने के दौरान आकलन

शिक्षिका ने देखा कि –

1. जया ने आम में नीला; गोपाल, गीता और मीना ने पीला; गोकुल, सुहास, उमेश ने हरा रंग भरा। टीचर ने सभी बच्चों के बनाए चित्र की तारीफ़ की। रंग आम से बाहर भी फैल गया तो उसे टोका नहीं।
2. बच्चों ने अपने बनाए आम के चित्र को नाम देने में बहुत उत्साह दिखाया। उन्होंने नाम दिए-मीठा आम, मेरा आम, बड़ा-सा आम, अच्छा आम, मैंगो।

क्या आप बता सकती/सकते हैं कि इस गतिविधि को कराने का क्या उद्देश्य रहा होगा? इसके आकलन के बिंदु क्या होंगे?

शिक्षिका ने बच्चों द्वारा बनाए चित्रों को दिये गए नामों को पार्टफ़ोलियो (पोर्टफ़ोलियो के बारे में आकलन से जुड़े कुछ मुद्दों के बिंदु-8 में विस्तार से बताया गया है।) में रखा।

कविता बनाओ

शिक्षिका ने बच्चों से कहा, "अब हम लोग मिलकर कविता बनाते हैं। तुम अपने आप भी कविता लिख सकते हो और किसी के साथ मिलकर भी।" कुछ बच्चों ने मिलकर कविता बनाने की इच्छा ज़ाहिर की। शिक्षिका ने बच्चों के समूह बनाए। उन्होंने कविता बनाने में बच्चों की मदद की। बच्चों ने कविताएँ कुछ इस तरह बनाईं –

- जया-हमें आम है लेना, फिर मम्मी को देना।
- गोपाल और मीना – पक्का आम कच्चा आम, देने नहीं पड़ेंगे दाम। सबसे बढ़िया फल है आम, कौन न जाने इसका नाम।
- सूरज-आम आम आम, मीठा पीला आम।
- रीना ने कविता आगे बढ़ाई –
  खा लो काटो छीलो, या दूध का मिल्कशेक पी लो।

*राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 में पहली और दूसरी कक्षा में भाषा शिक्षण के दौरान कला शिक्षण की सिफ़ारिश की गई है।

- सुहास-आम है पीला-पीला और है रसीला।
- गीता ने झट से पंक्ति जोड़ी – पापा हैं लाते, खाती है शीला।
- सोनू चुपचाप बैठी हुई थी। टीचर ने सोनू से कहा – तुम बनाओ कविता।
  सोनू बोली-आम, आम, आम
  फिर वह बोली-अब आगे नहीं आता।

सीखने-सिखाने के दौरान आकलन

शिक्षिका ने देखा कि –

1. जया ने सबसे पहले कविता बनाई।
2. गोपाल और मीना ने मिलकर कविता बनाई।
3. सूरज ने कविता की एक पंक्ति बोली रीना ने कविता को आगे बढ़या।
4. सुहास की बनाई कविता में गीता ने एक और पंक्ति जोड़ दी।
5. सोनू ने कविता बनाने की कोशिश की पर एक ही पंक्ति बना सकी।

टीचर ने बच्चों द्वारा लिखी कविताओं को उनके पोर्टफ़ोलियों में रखा। उन्होंने यह भी नोट किया कि मिलकर कविता बनाते समय कौन-कौन से बच्चे बढ़-चढ़ कर भाग ले रहे थे, आपस में एक-दूसरे के विचारों को सुन रहे थे, कविता सुनाने में किसने उत्साह दिखाया।

मालूम करो

इसके बाद शिक्षिका ने बच्चों से बातचीत की क्या तुम किसी ऐसे बच्चे/बच्ची को जानते हो जो कोई सामान बेचता है। मालूम करो कि वह स्कूल जाती/जाता है या नहीं। यदि नहीं तो मालूम करो कि वह स्कूल क्यों नहीं जाती/जाता।

संभावित उत्तर – अभी बहुत छोटा है, स्कूल बहुत दूर है, घर में छोटे भाई/बहन को देखती है आदि।

यहाँ दी गई गतिविधियाँ संकेत मात्र हैं। इसी प्रकार की अन्य गतिविधियाँ करवाई जा सकती हैं।

आपने देखा कि इस कविता को पढ़ाते समय शिक्षिका विभिन्न भाषायी कौशलों के विकास के साथ आकलन भी करती चली गईं। उन्होंने बच्चों से बातचीत करते समय उन्हें घर की बोली में बोलने का मौका देकर वातावरण को सहज बनाया। उनकी बताई चीज़ों को ब्लैकबोर्ड में लिखकर उन्हें अनुमान लगाकर पढ़ने का अवसर दिया। उन्होंने बच्चों के जीवन से जुड़े, अनुमान लगाने, तर्क करने, घर की बोली में बात करने, चित्रों पर आधारित सृजनात्मकता का अवसर देने वाले, कक्षा की दुनिया को बाहर की दुनिया से जोड़ने वाले, भाषा का अवलोकन, विषयों से जुड़ाव के अवसर देने वाले अभ्यास करवाए। कविता पर बातचीत के दौरान सवाल भी इस तरह से पूछे, जिनके उत्तर बच्चों ने अपनी कल्पना, अनुमान तथा तर्क के आधार पर दिए। ब्लैकबोर्ड पर बनाई तालिका से बच्चों में वर्गीकरण के कौशल का विकास तथा आकलन किया। तालिका में जया द्वारा गोकुल के लगाए गए गलत निशान को ठीक करने से साथी द्वारा साथी (Peer Assessement) का आकलन भी हुआ। आओ गिनें और लिखें गतिविधि द्वारा भाषा को गणित के साथ जोड़ते हुए लिखने के कौशल का आकलन किया। मेरा आम और कविता बनाओ गतिविधियों द्वारा बच्चों में सृजनात्मक कौशल के विकास के साथ उनकी सृजनात्मक अभिव्यक्ति और बोलने के कौशल का आकलन किया। उन्होंने

बच्चों की लिखी कविताओं तथा चित्रों को उनके पोर्टफ़ोलियो में रखा। इस प्रकार सीखने-सिखाने के दौरान ही शिक्षिका ने सुनना, बोलना, पढ़ना लिखना, वर्गीकरण, तर्क, अनुमान, अवलोकन, सृजनात्मक अभिव्यक्ति, संवेदनशीलता, समूह में कार्य करने की भावना, नेतृत्व की क्षमता आदि सभी पहलुओं का आकलन करते हुए उनके विकास के लिए भरपूर अवसर दिए।

आपने देखा कि कविता पढ़ाने के दौरान शिक्षिका किस प्रकार आकलन करने के साथ-साथ उन्हें सीखने में सहयोग भी देती गई। इसके बाद उन्होंने यह जानने के लिए कि 'बच्चों ने कहाँ तक सीखा' कुछ गतिविधियों (अवलोकन, बातचीत, मिलती-जुलती ध्वनि वाले शब्द ढूँढ़ना, कविता आगे बढ़ाना) का आयोजन व्यक्तिगत तथा सामूहिक दोनों प्रकार से किया। सवाल तथा गतिविधियाँ –

आम से क्या-क्या चीज़ें बनती है?

आम से मिलती-जुलती ध्वनि वाले शब्द बताओ।

टोकरी शब्द के अंत में 'री' आता है, ऐसे ही कुछ और शब्द लिखो।

यदि यह लड़की आम की जगह संतरे बेच रही होती तो कविता कैसे आगे बढ़ती?

फ़्लैश कार्ड पर लिखे शब्द बच्चों से पढ़ने को कहा।

सीखे हुए का आकलन

शिक्षिका ने गतिविधियों के दौरान अवलोकन करते हुए बच्चों के बारे में विशेष बातों को रजिस्ट्रर में दर्ज किया। दो बच्चों के बारे में दर्ज टिप्पणियाँ इस प्रकार हैं –

1. जया आत्मविश्वास के साथ बोलती है। शब्दों के बीच के अंतर को समझती है। समूह कार्य में दायित्व लेती है। शब्दों को अपने-आप पढ़ लेती है। मिलती-जुलती ध्वनि वाले शब्द बताने में उत्साह दिखाती है। लिखने में और प्रयास की आवश्यकता है।
2. सोनू बोलने में झिझकती है । अनुमान लगाकर पढ़ने का प्रयास करती है। मिलती-जुलती ध्वनि वाले शब्द बना लेती है। समूह में कार्य करने में संकोच करती है। अपने आप कविता बना लेती है।

नोट- सीखे हुए का आकलन दो/तीन/चार पाठ पढ़ाने के बाद कभी भी किया जा सकता है।

उदाहरण-2

किरमिच की गेंद (कहानी)

'किरमिच की गेंद' कक्षा 4 की पाठ्य-पुस्तक रिमझिम भाग 4 का तीसरा पाठ है। इस कहानी में दिनेश नाम के लड़के को एक गेंद पड़ी मिलती है। वह गेंद के मालिक की तलाश करता है। बहुत से बच्चे उसे 'अपनी गेंद' कहते हैं पर इस बात को साबित नहीं कर पाते। आखिर में वे बहस करने के बजाए गेंद से मिलकर खेलने लगते हैं।

सीखने-सिखाने के बिंदु

- कागज़/कपड़े द्वारा गेंद बनाने के चरणों को सुनकर समझना तथा उस प्रक्रिया के अनुसार कार्य करना।

- नए शब्दों का परिचित परिस्थितियों में प्रयोग करना।
- संदर्भ के अनुसार नए शब्दों का अर्थ समझना।
- अपने दैनिक जीवन के अनुभवों को आत्मविश्वास के साथ सुनाना।
- किसी खास जानकारी के लिए पाठ्य सामग्री को पढ़ना।
- किसी व्यक्ति, वस्तु, घटना आदि के बारे में अपनी राय देना।
- किसी समान लक्ष्य के लिए समूह में मिलकर कार्य करना।
- दूसरों की अभिव्यक्ति को सम्मान देने के लिए उसे धैर्य तथा ध्यान से सुनना।
- पठन कौशल का विकास करना।
- किसी शंका, जिज्ञासा या सूचना-प्राप्ति के लिए प्रश्न करना।
- पूछे गए प्रश्न या दिए गए विषय के बाने में लिखकर अभिव्यक्त करना।

गेंद बनाओ

इस क्रियाकलाप के लिए रबरबैंड, रद्दी कागज़, लिखने के लिए चार्ट या साधारण कागज़ आदि की ज़रूरत होती है। शिक्षक ने इस बारे में बच्चों को एक दिन पहले ही बता दिया। वह पर्याप्त मात्रा में सामग्री कक्षा में लेकर गए ताकि यदि कोई बच्चा सामग्री न ला सके तो भी वह क्रियाकलाप में शामिल हो सके। बच्चों से खेल और खिलौनों पर बातचीत की –

- खाली समय में क्या-क्या करते हो?
- कौन-कौन से खेल खेलते हो?
- खेल में किन-किन चीज़ों की ज़रूरत होती है?
- गेंद किस-किस तरह की होती है?
- कभी कागज़ की गेंद देखी है?

इसके बाद बच्चों को कागज़ की गेंद दिखाकर कहा, “आज हम कागज़ से गेंद बनाएँगे।” बच्चों को कागज़ से गेंद बनाकर दिखाई। रद्दी कागज़ को सिकोड़कर गोल आकृति देने के बाद, उस पर समान रूप से रबरबैंड लपेटने से गेंद बन गई। उसे धीमे से उछालकर या ज़मीन पर टप्पा मारकर दिखाया। एक-दो बच्चों को भी यह कार्य का अवसर दिया। इसके बाद बच्चों के जोड़े या समूह बनाकर गेंद बनाने के लिए कहा और यह देखा कि प्रत्येक समूह के पास गेंद बनाने की पर्याप्त सामग्री हो। बच्चों द्वारा गेंद बनाते समय उनके पास जाकर बातचीत की। उनकी सराहना की और ज़रूरत पड़ने पर मदद भी की। (इस गतिविधि को आगे बढ़ाते हुए बच्चों से कागज़ की गेंद में रंग भरने के लिए कहा जा सकता है। पुराने कपड़े से भी गेंद बनवाई जा सकती है।) जब सभी बच्चों/समूहों ने गेंद बना ली तो उन्हें मेज़ पर सजाकर प्रदर्शनी लगवाई।

सीखने-सिखाने के दौरान आकलन

शिक्षक ने देखा कि–

1. मीना अखबार नहीं लाई। उसने घर में पूछा पर उसे मना कर दिया गया। मीना कहीं से प्रयास करके अखबार का लिफाफा लाई।
2. सन्नी ने अपनी गेंद के बारे में खुशी से बताया। उसने बताया कि गेंद की ‘कीमत’ 10 रुपए है। उसने पहली बार ‘कीमत’ शब्द का प्रयोग किया।

3. कामना ने मनोज से रबरबैंड माँगे। मनोज ने दे दिए। कामना ने 'थैंक यू' कहा।
4. विपिन ने बताया, मेरी गेंद भी लाल रंग की थी। वह खो गई थी। विपिन को अपने खिलौनों के बारे में बताना अच्छा लगता है।
5. रजनी कुछ बताते हुए झिझकती थी। आज वह दूसरों की बात ध्यान से सुन रही थी। एक दो जगह उसने अपनी बात जोड़ी। ''मैं भी'' उसने कहा।
6. रमेश सबको अच्छे तरीके से गेंद बनाना बता रहा था। उसने पूरा तरीका ध्यान से देखा-सुना।

'धीमी' गेंद प्रतियोगिता

शिक्षक ने कक्षा में बस्तों/डेस्कों को हटाकर सबसे 'धीमी' गेंद प्रतियोगिता के बारे में बताया। बच्चों से कहा कि वे गेंद को दीवार पर बहुत धीमी गति से फेंकें। इस प्रतियोगिता में जिस बच्चे की गेंद सबसे बाद में दीवार से टकराएगी, वह जीता हुआ माना जाएगा। जिस बच्चे की गेंद बीच रास्ते में रुक जाएगी, उसे प्रतियोगिता से बाहर माना जाएगा। (यह गतिविधि कक्षा से बाहर मैदान में भी करवाई जा सकती है।)

खेल के बाद शिक्षक ने बच्चों से कहा, "आज हम जो कहानी पढ़ेंगे, उसमें भी एक गेंद है। पर वह गेंद कागज़ की नहीं बल्कि किरमिच की गेंद है" खेल के बाद कुछ सवाल पूछे, "किस-किस ने किरमिच की गेंद देखी है? किस खेल के लिए किरमिच की गेंद इस्तेमाल करते हैं?"

बच्चों को किरमिच की गेंद दिखाई ताकि जिन बच्चों ने वह नहीं देखी थी या देखी तो थी पर उसका नाम नहीं पता, वे भी पहचान जाएँ कि किरमिच की गेंद कैसी होती है।

सीखने-सिखाने के दौरान आकलन

शिक्षक ने देखा कि –

1. दीपक और सविता डेस्कों को हटाने का नेतृत्व कर रहे थे। उन्होंने बात को अच्छी तरह समझकर दूसरे बच्चों को भी बताई।
2. ममता ने बताया, " किरचिम की गेंद पर 'खुरदरी' लाइनें होती हैं।" चंचल ने बताया, "दो लाइनें होती हैं।"
3. रमेश ने बताया, "किताब में किरमिच की गेंद का चित्र नहीं है। रबड़ वाली गेंद का है।" रमेश चीज़ों को गौर से देखता है।
4. आबिदा की गेंद बीच में रुक गई। वह पूरे समय अपनी गेंद को प्रोत्साहित कर रही थी, "चल-चल, रूक मत, थोड़ा आगे जा ...।"
6. अमित की गेंद जीत गई। वह खुश था पर उसने कहा, "मेरी गेंद सबसे फ़िसडड्डी है।" उसे कल एक बच्चे ने फ़िसडड्डी कहा था। वह उसी को सुनाकर कह रहा था, क्योंकि कल का फ़िसडड्डी आज जीत रहा था।

सुनो कहानी

बच्चों को कहानी पढ़कर सुनाई। (कहानी सुनाने के लिए आप टेप रिकॉर्डर/मुखौटों आदि का प्रयोग भी कर सकते हैं। कहानी सुनाते समय अपनी आवाज़ इतनी ऊँची रखें कि सबसे पीछे बैठे बच्चों तक आवाज़ पहुँचे। अच्छा यह रहेगा कि बच्चों के सामने खड़े होकर कहानी सुनाएँ। यदि बच्चे डेस्क पर बैठे हैं तो उनके साथ बैठा जा सकता है पर ध्यान रखें कि प्रत्येक बच्चा आपको देख सके। बोलने की गति

मध्यम रखें। बहुत जल्दी-जल्दी या धीरे-धीरे न बोलें। कहानी/प्रसंग के अनुसार आवाज़ में उतार-चढ़ाव का ध्यान रखें। बीच-बीच में ऐसे प्रश्न न पूछें जिनके उत्तर में बच्चों को आपकी बात दोहरानी हो। अनावश्यक प्रश्न कहानी का आनंद कम करते हैं। हाँ, आगे क्या हुआ होगा? फिर? इस तरह के प्रश्न पूछे जा सकते हैं।) शिक्षक ने प्रयास किया कि पूरी कहानी शुरू से अंत तक एक ही पीरियड में बच्चे सुन सकें, क्योंकि कहानी बीच में छूट जाने से कहानी का आनंद कम हो जाता है। (यदि कहानी को बीच में छोड़ना ही पड़ जाए तो ऐसे मोड़ पर कहानी छोड़ें ताकि बच्चों की आगे जानने की उत्सुकता बनी रहे।)

सीखने-सिखाने के दौरान आकलन

शिक्षक ने देखा कि –

1. रीमा ने सबसे पहले कहानी वाला पृष्ठ खोल लिया। उसे कहानी अच्छी लगी। उसके चेहरे पर मुस्कान थी।
2. रामा को कहानी की पृष्ठ संख्या याद थी। उसने कक्षा में घोषणा की-पेज नंबर 11 खोलो।
3. सोहेल ने कहानी पहले से पढ़ ली थी। उसे कहानी पढ़ना अच्छा लगता है।
4. कंचन ने मेरा वाक्य पूरा किया। मैंने कहा, "गढे के ऊपर ही एक बिलकुल नई चमचमाती किरमिच की ...।" उसने कहा, " गेंद पड़ी थी।"
5. सब बच्चे कहानी गौर से सुन रहे थे। आदित्य ने पास बैठे बच्चे के कान में कहा," मैं भी किरमिच की गेंद खरीदूँगा।"

बातचीत

कहानी सुनाने के बाद शिक्षक ने बच्चों से पूछा, "आपको इस कहानी में कौन-कौन सी बातें अच्छी लगीं? क्या कोई बात ऐसी भी थी जा अच्छी नहीं लगी?" बातचीत इन बिंदुओं पर आधारित थी–

- गेंद के मालिक को पहचानने के तरीके
- गेंद कहाँ से आई, कहाँ गई होगी?
- दिनेश और बाकी बच्चों की दोस्ती कच्ची थी या पक्की?
- क्या आपने अपने दादा-दादी/माता-पिता आदि से गेंद से जुड़े कुछ मज़ेदार अनुभव सुनें हैं? यदि हाँ, तो अपने साथियों को भी वे अनुभव सुनाएँ।
- कहानी के साथ दिए चित्र में दिखाए गए बच्चों के नाम क्या होंगे और क्यों?

यह बातचीत समूह में भी करवाई जा सकती है। प्रत्येक समूह एक बच्चे को यह जिम्मेदारी देगा कि वह सभी बच्चों की बातों को संक्षेप में या बिंदुओं के रूप में दर्ज करता रहे। यह कार्य समय-समय पर अलग-अलग बच्चों को दिया जा सकता है ताकि सभी की **भागीदारिता** बनी रहे।

सीखने-सिखाने के दौरान आकलन

शिक्षक ने देखा कि –

- अंजली ने बताया, "मुझे इस कहानी में ये बात अच्छी लगी कि सब बच्चे लड़ाई छोड़कर खेलने लगे।" उसने पहली बार कक्षा में पूरा वाक्य बोला।
- दिनेश ने कहा, "मुझे गेंद का खो जाना अच्छा नहीं लगा।" पूरे समय उसके चेहरे पर मुस्कान

थी, क्योंकि कहानी में भी मुख्य पात्र का नाम दिनेश था।

- मोहसिन कम बोलता है पर जब कोई दूसरा बोल रहा हो, गौर से सुनता है। हर बोलने वाले की ओर गर्दन घुमा कर देखता भी है।
- सुशीला ने गेंद के लिए 'गिंडो' शब्द का प्रयोग किया। सब बच्चों के लिए यह नया शब्द था। मेरे लिए भी!
- वकील ने गेंद के मालिक को पहचानने के चार तरीके सुझाए।
- मधु ने वकील की बात का विरोध किया। उसने कहा, " गेंद के मालिक का पता पुलिस नहीं लगाएगी। गेंद तो बहुत 'मामूली' होती है।" उसकी कल्पनाशीलता गज़ब की है।

सवाल-जवाब

शिक्षक ने बच्चों को समूहों में बाँटा। प्रत्येक समूह को कहानी का एक अंश अपनी पसंद से चुनने और उसके आधार पर एक सवाल सोचने के लिए कहा। (अच्छा रहेगा कि समूह अपने सवाल लिख लें ताकि बाद में असुविधा न हो।) समूह के सभी सदस्यों ने अपने समूह में कौन क्या कार्य करेगा, इसका फ़ैसला स्वयं किया। बच्चों ने अपना अंश पढ़कर बाकी समूहों को सुनाया। अंश सुनाने के बाद उन्होंने अपने समूह द्वारा लिखा गया प्रश्न सुनाया। बाकी समूहों को उसका उत्तर बताना था। सबसे पहले सही उत्तर बताने वाले समूह को दस अंक मिले। सबसे अधिक अंक प्राप्त करने वाला समूह विजेता माना गया। (इस कार्य को अलग तरह से भी करवाया जा सकता है। सभी समूह बारी-बारी से अपना-अपना अंश और प्रश्न सुनाएँगे, बाकी समूह अपनी-अपनी कॉपी में प्रश्न और उनके उत्तर लिखते रहेंगे।)

इस दौरान शिक्षक ने प्रत्येक समूह के पास जाकर उनके कार्य और चर्चा में भाग लिया और ज़रूरत पड़ने पर उन्हें सुझाव भी दिए।

सीखने-सिखाने के दौरान आकलन

शिक्षक ने देखा कि–

1. अजय बहुत अच्छे तरीके से पढ़कर सुनाता है। सही जगह रुकता है और आवाज़ में उतार-चढ़ाव लाता है।
2. नीलम की लिखाई बहुत सुंदर है। वह ध्यान से लिखती है और गलतियाँ न के बराबर करती है।
3. गुरमीत जवाब देने लगा था पर रुक गया। जवाब देने से पहले उसने अपने समूह में चर्चा की।
4. रमा ने सबकी बात ध्यान से सुनी, फिर अपनी तरफ से वाक्य ठीक करके लिख दिया। उसने लिखा-"क्लब के सदस्यों को अलग-अलग बल्ले रखने के बजाए बल्ला एक और गेंद अनेक रखनी चाहिए थी।" उसका यह वाक्य सचमुच अद्भुत है!

नोट – इस प्रकार 'किरमिच की गेंद' कहानी को पढ़ाने के लिए शिक्षक ने बच्चों की रुचियों के अनुकूल अनेक गतिविधियों का आयोजन किया। इस कहानी को पढ़ाने के लिए इन गतिविधियों के अतिरिक्त ऐसी ही दूसरी गतिविधियाँ कक्षा में तथा कक्षा के बाहर करवाई जा सकती हैं।

आपने देखा कि इस कहानी को शिक्षक ने किस तरीके से बच्चों के सामने खोला। उन्होंने बच्चों की

रुचियों को ध्यान में रखते हुए कई गतिविधियों जैसे– गेंद बनाना, खेल प्रतियोगिता आदि का आयोजन किया। प्रत्येक पल वे ध्यान से बच्चों का अवलोकन कर रहे थे और उनके जवाबों, कार्यों और भावों से पता कर रहे थे कि किस बच्चे के दिमाग में क्या चल रहा है? उदाहरण के लिए, गेंद बनाने की गतिविधि के दौरान उन्होंने बच्चों के श्रवण और निरीक्षण कौशल का आकलन किया। सुनो कहानी गतिविधि द्वारा बच्चों की रुचि और श्रवण कौशल के बारे में उन्हें कई बातें पता चलीं। सवाल-जवाब गतिविधि द्वारा बच्चों के लेखन कौशल का आकलन किया। इस प्रकार उन्होंने न केवल कहानी को रोचक रूप से पढ़ाया बल्कि कक्षा के अनेक बच्चों के भाषायी कौशलों के बारे में बहुत-सी बातें भी पता कर लीं।

4. आकलन से जुड़े कुछ मुद्दे

- बोलने-पढ़ने संबंधी गतिविधियों के दौरान बच्चे द्वारा गलत उच्चारण करने, हाव-भाव (विस्मय आदि) का प्रयोग न करने पर उसे तुरंत टोकें नहीं। आपका टोकना उसमें भय और अरुचि के भाव उत्पन्न करेगा।
- यदि आप यह आकलन कर रहे हैं कि बच्चा आत्मविश्वासपूर्वक बोल रहा है, यह नहीं तो आपको यह भी देखना होगा कि उसे अब तक बोलने के अवसर मिले भी हैं या नहीं। कई बच्चों को घर में बोलने पर बहुत टोका जाता है जिसका नतीजा यह होता है कि बच्चा बोलने में झिझकता है। जिस बिंदु का आप आकलन करना चाहते हैं, उससे जुड़े कार्य करने के भरपूर अवसर बच्चों को दें। उन्हें कक्षा में स्वयं को अभिव्यक्त करने, सवाल पूछने और अपनी बात रखने की स्वतंत्रता मिलनी ही चाहिए। कक्षा में इस प्रकार का सकारात्मक वातावरण एक दिन में ही बनना संभव नहीं है बल्कि यह भी एक सतत् प्रक्रिया है, ठीक आकलन की ही तरह।
- यदि आपको किसी प्रश्न का अपेक्षित उत्तर न मिले तो आप यह जानने-समझने का प्रयास करें कि उत्तर देते समय बच्चे का दृष्टिकोण क्या रहा होगा। प्रत्येक बच्चे का दृष्टिकोण और सोचने का तरीका विशिष्ट /अलग होता है। इसलिए आपको एक ही प्रश्न के अनेक उत्तर मिलेंगे। जिन उत्तरों से आप सहमत नहीं हैं, उनके लिए भी नकारात्मक टिप्पणियाँ न दें। बच्चों के कई उत्तर कल्पना के आधारों पर स्वीकार किए जाने चाहिए न कि वैज्ञानिक सटीकता के आधार पर, क्योंकि बच्चों का कल्पना संसार बड़ों के वास्तविक संसार से कहीं अधिक समृद्ध होता है।
- कक्षा में यदि बच्चे अपने घर की बोली या स्थानीय भाषा में स्वयं को अभिव्यक्त करते हैं तो भी उनकी अभिव्यक्ति को समान महत्व दें।
- आकलन करने के लिए सबसे ज़रूरी यह है कि आप अपनी कक्षा के बच्चों, उनकी परिस्थितियों और ज़रूरतों को समझें। उदाहरण के लिए, यदि आप यह देखना चाहते हैं कि बच्चा सामग्री जुटाने में उत्साहपूर्वक भाग लेता है या नहीं/घर से अखबार लाया है या नहीं, तो आपको यह भी ध्यान देना होगा कि बच्चा यदि अखबार नहीं ला सका तो उसका कारण क्या रहा होगा। संभव

है कि उसके घर में अखबार आता ही न हो या उसे अनुमति ही न मिली हो अखबार लाने की।

- आप अपने पास एक रजिस्टर या डायरी में प्रत्येक बच्चे के नाम का लिखकर उनमें उस बच्चे के लिए टिप्पणियाँ लिख सकते हैं। एक बार में सभी के बारे में टिप्पणियाँ नहीं लिखी जा सकतीं।
- यह ज़रूरी नहीं है कि हर क्रियाकलाप/गतिविधि में कक्षा के हर बच्चे का आकलन किया जाए। यदि कक्षा में तीस या अस्सी बच्चे बैठे हों तो हर बच्चे का आकलन एक ही समय पर करना कठिन है क्योंकि आकलन करते समय आपको बच्चे की हर गतिविधि पर ध्यान देना होगा। इसीलिए कभी आप बच्चे का व्यक्तिगत रूप से आकलन करें तो कभी सामूहिक रूप से। सामूहिक आकलन के लिए आप इन दो पक्षों पर विचार कर सकते हैं –
    - ○ बच्चा अपने समूह में किस प्रकार की भाषा का प्रयोग कर रहा है, समूह में किस प्रकार सहयोग कर रहा है तथा समूह का प्रतिनिधित्व किस प्रकार कर रहा है। यह आप केवल एक समूह पर ध्यान केंद्रित करके पता लगा सकते हैं।
    - ○ दूसरा तरीका यह है कि आप यह देखें कि प्रत्येक समूह में किन-किन बच्चों ने अपने उत्तरदायित्वों को अच्छी तरह समझकर कार्यों में रुचि दिखाई। उदाहरण के लिए, प्रत्येक समूह में किस-किस ने कक्षा के सामने पूरे आत्मविश्वास के साथ अपने समूह का प्रतिनिधित्व किया।
- पोर्टफ़ोलियो-सत्र के पहले दिन से लेकर आखिरी दिन तक बच्चे तरह-तरह की गतिविधियों के दौरान बहुत कुछ लिख/बना रहे होते हैं। यह सब उनके पोर्टफ़ोलियो/फोल्डर में रखा जा सकता है। यदि आधुनिकतम तकनीकों की सुविधा हो तो सी.डी. DVD कैसेट द्वारा उनके मौखिक कार्यों को भी पोर्टफ़ोलियो में रखना संभव हो सकता है। पोर्टफ़ोलियो रखने का सबसे बड़ा लाभ यह है कि बच्चे अपने काम को उलट-पुलट कर देख सकते हैं, अभिभावकों को भी अपने बच्चे के काम की जानकारी मिलती रहती है, शिक्षक भी उसे सिर्फ़ जाँच नहीं अपितु सिखाने की प्रक्रिया का महत्वपूर्ण उपकरण बना सकते हैं। अब सवाल अठता है कि पोर्टफ़ोलियो में क्या-क्या हो। यहाँ कुछ बातें सुझाव रूप में दी जा रही हैं –

कक्षा 1और 2	**कक्षा 3और 5 (कक्षा 1 और 2 के लिए सुझाए गए बिंदुओं के साथ-साथ)**
● तस्वीरें, चित्रकारी, लेख के नमूने, लेखन के शुरुआती दौर के वाक्य।	● लिखी हुई घटनाओं, कहानियों पर बनाए गए चित्र, शब्द और वाक्य।

• मौखिक अभिव्यक्ति—यदि बच्चों द्वारा सुनाया गया वर्णन, कहानी, संवाद, कविता, चुटकुले, पहेलियों आदि रिकॉर्डिंग की गई हो तो उनके/सी.डी. DVD। • श्रुतलेख, अनुकरण लेखन के नमूने। • शुरुआती दौर का पठन, चित्र आदि को पढ़ने के नमूने (शिक्षिका द्वारा लिखे गए)। • किसी चित्र को देखकर वर्णन करने के नमूने। • घटना/कहानी पर बनाए गए चित्र और शब्द।	• अपनी समझ से लिखी गई कहानी, घटना वृत्तांत • नाटक के अभिनय के लिए ज़रूरी सामान की बनाई गई सूची और पात्रों के संवाद। • तैयार किए गए विज्ञापन, नोटिस। • अनुच्छेद लेखन। • पत्र। • स्वरचित कविताएँ/कहानियाँ।

- कक्षा में सीखने-सिखाने के दौरान इस बात का प्रयास करें कि बच्चों को लगे कि उनकी बात का कक्षा में सम्मान किया जाता है। इसके लिए आप उनकी बातों को धैर्य और ध्यान से सुनें, उनकी तारीफ़ करें और गतिविधियों में भाग लेने के लिए उन्हें प्रोत्साहित करें।
- कक्षा के क्रियाकलापों, रोज़मर्रा के कार्यों, योजना बनाने और सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में बच्चों को समान अवसर दें, उनसे सहयोग लें और उन्हें सहयोग दें। समान अवसर का मसला बहुत जटिल हो सकता है। इसका अर्थ यही है कि बच्चों को उनकी ज़रूरतों के अनुसार अवसर और सहयोग दें। कक्षा के लिए जो फैसले लिए जाते हैं, उनमें बच्चों की राय को भी सम्मान दें और स्वयं आदेश देने और लागू करने के बजाय बच्चों के साथ चर्चा करके लोकतांत्रिक तरीकों से निर्णय लें।
- यदि कक्षा में विशेष आवश्यकता वाले बच्चे हैं तो उनकी क्षमताओं के सदुपयोग के अवसर भी आपको तलाशने होंगे। आप जिन गतिविधियों की योजना बना रहे हैं, उनमें लिंग, जाति या धर्म के आधार पर भेदभाव की गुंजाइश नहीं होनी चाहिए।

शिक्षिका/शिक्षक द्वारा अपने प्रयास का स्व-आकलन

बच्चे के सीखने के स्तर और उपलब्धियों को परखने के साथ यह जानना भी आवश्यक है कि शिक्षिका/शिक्षक द्वारा कक्षा में अपनाए गए तरीके बच्चों की समझ बढ़ाने में कितने सहायक सिद्ध हुए हैं। इसलिए शिक्षक द्वारा अपने सिखाने के तरीकों का स्व-आकलन भी ज़रूरी है ताकि वह अपने सिखाने के तरीकों में बदलाव लाकर उनकी मदद कर सकें।

- मैंने कक्षा का वातावरण सहज बनाया।
- मैंने प्रत्येक बच्चे की क्षमता और रुचि की पहचान की।
- मैंने प्रत्येक बच्चे/समूह की सहायता की।
- मैंने जो बच्चे मदद माँगने में संकोच कर रहे थे, उनसे व्यक्तिगत रूप से बातचीत की।
- मैंने बच्चे की प्रगति का रिकॉर्ड रखा।
- मैंने प्रत्येक बच्चे/समूह के प्रयास की सराहना करते हुए उन्हें प्रोत्साहित किया।

- मैंने कक्षा में भाषायी विविधता को प्रोत्साहित किया।
- मैंने किसी भी प्रकार के पूर्वाग्रह से दूर रहते हुए प्रत्येक बच्चे का आकलन किया।
- मैंने बच्चों की मौलिकता/सृजनशीलता को महत्त्व दिया।
- मैंने प्रत्येक बच्चे/समूह की बात को ध्यान तथा धैर्य से सुना।
- मैंने आकलन के दौरान एक बच्चे/समूह की तुलना दूसरे बच्चे/समूह से नहीं की।
- सृजनात्मक लिखित अभिव्यक्ति का आकलन करते समय वर्तनी की अशुद्धियों पर नहीं बल्कि विचार, मौलिकता एवं रचनात्मकता को महत्त्व दिया।
- सिखाने के विविध तरीकों का इस्तेमाल किया।

आकलन – कहीं ऐसा तो नहीं!

टीचर ने दूसरी कक्षा के बच्चों को कविता पढ़ाई– 'बहुत हुआ'। कविता बहुत ही सुंदर ढंग से पढ़ाई गई थी। बच्चों ने भी कविता का भरपूर आनंद उठाया। कविता पढ़ाने के बाद उन्होंने बच्चों से अभ्यास तथा गतिविधियाँ करवानी शुरू कीं। उन्होंने पूछा, – "बरसात होने पर आस-पास कैसा दिखाई देता है?" कक्षा के सभी बच्चों ने जवाब देने शुरू किए, – "सड़कें गीली हो जाती हैं, पेड़-पौधे भीग जाते हैं, गढ़ों में पानी भर जाता है, लोग बारिश से बचने के लिए जगह ढूँढ़ते हैं, बरसात से बचने के लिए कोई छाता लगाता है तो कोई रेनकोट पहचता है आदि।" टीचर द्वारा पूछे गए सवाल का जवाब देने में सभी बच्चे बड़े उत्साह से भाग ले रहे थे। टीचर बच्चों के जवाबों पर अपनी टिप्पणी रजिस्टर में लिखती जा रही थीं। कक्षा में ही एक बच्चा चुपचाप उदास-सा बैठा था। वह इस सवाल का जवाब कैसे देता कि बरसात होने पर आस-पास कैसा दिखाई देता है? वह बच्चा देख जा नहीं सकता था। इस बच्चे की शारीरिक सीमाओं को भी ध्यान में रखते हुए यदि टीचर ने कुछ इस तरह सवाल पूछा होता-बरसात होने पर आसपास से कैसी आवाज़ें आती हैं, तो कक्षा के अन्य बच्चों की तरह यह बच्चा भी बढ़-चढ़कर भाग लेता।

5. आकलन – रिकॉर्डिंग और रिपोर्टिंग

आकलन के संदर्भ में एक शिक्षक के लिए यह जानना-समझना ज़रूरी है कि उसकी कक्षा के बच्चे किस प्रकार सीखते हैं और सीखने की प्रक्रिया में उन्हें किससे तथा किस प्रकार की मदद की ज़रूरत है। शिक्षक कक्षा में पढ़ाते समय बच्चों के बारे में जो भी अवलोकन करते हैं, उससे उन्हें बच्चों के सीखने के बारे में एक अंदाज़ा तो हो ही जाता है। रिकॉर्डिंग के कई तरीके हैं, जैसे – चैक लिस्ट, अवलोकन, वीडियो रिकॉर्डिंग, पोर्टफ़ोलियों, फ़ोटोग्राफ्स आदि। ये सभी तरीके सीखने के बारे में कई तरह की जानकारी देते हैं। रिकॉर्ड की गई बातों का महत्व न केवल शिक्षक के लिए है बल्कि अभिभावकों, प्रशासकों और सभी शिक्षकों के लिए भी है।

रिपोर्टिंग

अभिभावक बच्चे की प्रगति जानने के लिए उत्सुक रहते है। ऐसे में आपको अभिभावकों को लिखित में जानकारी देनी होती है कि उनके बच्चे/बच्ची की प्रगति की कैसी स्थिति है? इसके लिए अच्छा यह

रहेगा कि आप पाँच-छ: पाठ पढ़ाने के बाद कक्षा में किए गए अवलोकन, पोटफ़ोलियो, बच्चों द्वारा किए गए कार्य आदि के आधार पर रिपोर्ट बनाएँ। यदि विद्यालय में रिपोर्ट कार्ड देने की परंपरा है तो उसे इस तरह तैयार किया जाए कि उसमें गुणात्मक टिप्पणियों के लिए पर्याप्त स्थान हो। यदि विद्यालय में यह कार्य शासकीय स्तर पर होता है तो उच्च शिक्षा अधिकारियों को इस बारे में प्रशिक्षित किए जाने की आवश्यकता है कि रिपोर्टिंग का लिखित रूप किस प्रकार का हो? सुझाव के रूप में पहली कक्षा के एक बच्चे के विभिन्न भाषायी कौशलों का आकलन, (पहले, दूसरे और तीसरे चार माह में) का ब्यौरा आगे दिया जा रहा है। इसके आधार पर अभिभावकों को बच्चे की प्रगति के बारे में जानकारी तथा सुझाव दिए जा सकते हैं। इसे हर तीन अथवा चार माह के बाद किया जा सकता है।

कक्षा-1

विभिन्न भाषायी कौशलों का आकलन (पहले चार माह)				
हिंदी (संकेतक)	**मदद की ज़रूरत है**	**कठिनाई से कर सकती/सकता है।**	**अच्छी तरह कर सकती/ सकता है।**	**विशेष प्रतिभा का प्रदर्शन करती/ करता है।**
• रुचि के साथ कहानियाँ/कविताएँ सुनती और सुनाती है।			√	
• समझ के साथ कहानियाँ सुनती और सुनाती है।			√	
• कहानी से जुड़े प्रश्नों के उत्तर देता है और प्रश्न पूछती है।			√	
• अपना और अपने साथियों का नाम पढ़ लेती है।		√		
• मात्रा वाले परिचित शब्द पढ़ती है।	√			
• सरल वाक्य पढ़ती है।				
• चित्रों का वर्णन करती है।	√		√	
• अपना नाम लिखती है।				
• सरल वाक्य लिखती है।	√			
• मौखिक अभिव्यक्ति में कल्पना व सृजनात्मकता का प्रदर्शन करती है।				√

टिप्पणी – चेतना कहानी/कविताएँ सुनने में आनंद लेती है। बेझिझक होकर कहानी से जुड़े सवाल पूछती है। अपना नाम पढ़ लेती है और अपने कुछ साथियों का नाम पढ़ने की कोशिश करती है। किताबों को उठाने में रुचि दिखाती है। चित्रों को निहारती है। चित्रों के बारे में अपने साथियों के साथ बातचीत करती है। अवसर मिलने पर चित्रों के ज़रिए अपनी बात अभिव्यक्त करने की कोशिश करती है। अभी वह लिख नहीं पाती है। उसकी पढ़ने-लिखने में दिलचस्पी है। उसे पढ़ने-लिखने के अधिक से अधिक अवसर मिलने चाहिए। चित्रों के नीचे उसे चित्र के बारे में लिखने के लिए प्रोत्साहित किया जाए तो लिखना सीखना उसके लिए आसान हो जाएगा।

विभिन्न भाषायी कौशलों का आकलन (पहले चार माह)				
हिंदी (संकेतक)	**मदद की ज़रूरत है**	**कठिनाई से कर सकती/ सकता है।**	**अच्छी तरह कर सकती/ सकता है।**	**विशेष प्रतिभा का प्रदर्शन करती/करता है।**
• रुचि के साथ कहानियाँ/कविताएँ सुनती और सुनाती है।			√	
• समझ के साथ कहानियाँ सुनती और सुनाती है।			√	
• कहानी से जुड़े प्रश्नों के उत्तर देता है और प्रश्न पूछती है।				
• अपना और अपने साथियों का नाम पढ़ लेती है।			√	
• मात्रा वाले परिचित शब्द पढ़ती है।		√		
• सरल वाक्य पढ़ती है।				√
• चित्रों का वर्णन करती है।	√	√		
• अपना नाम लिखती है।				
• सरल वाक्य लिखती है।	√			√
• मौखिक अभिव्यक्ति में कल्पना व सृजनात्मकता का प्रदर्शन करती है।				

टिप्पणी – कविता/कहानियाँ सुनना-सुनाना चेतना को बहुत अच्छा लगता है। अब वह अपनी कक्षा के लगभग सभी बच्चों के नाम पढ़ लेती है। मात्रा वाले परिचित शब्दों को भी पढ़ने की कोशिश करती है और पढ़ने में रुचि दिखाती है। अपना नाम मन से कहानियाँ गढ़ भी लेती है। उसकी कल्पना बड़ी अनूठी होती है।

टिप्पणी – चेतना कहानी/कविताएँ बहुत प्रभावशाली ढंग से सुनाती है। उसके पठन कौशल में बहुत अधिक सुधार हुआ है। चित्रों का वर्णन तो बहुत

विभिन्न भाषायी कौशलों का आकलन (पहले चार माह)				
हिंदी (संकेतक)	**मदद की ज़रूरत है**	**कठिनाई से कर सकती/सकता है।**	**अच्छी तरह कर सकती/सकता है।**	**विशेष प्रतिभा का प्रदर्शन करती/करता है।**
• रुचि के साथ कहानियाँ/कविताएँ सुनती और सुनाती है।				√
• समझ के साथ कहानियाँ सुनती और सुनाती है।			√	
• कहानी से जुड़े प्रश्नों के उत्तर देता है और प्रश्न पूछती है।			√	
• अपना और अपने साथियों का नाम पढ़ लेती है।			√	
• मात्रा वाले परिचित शब्द पढ़ती है।			√	
• सरल वाक्य पढ़ती है।		√		
• चित्रों का वर्णन करती है।				√
• अपना नाम लिखती है।			√	
• सरल वाक्य लिखती है।		√		
• मौखिक अभिव्यक्ति में कल्पना व सृजनात्मकता का प्रदर्शन करती है।				√

लिख लेती है। लेकिन वाक्यों को लिखने में उसे मदद की ज़रूरत होती है। चित्रों को बहुत बारीकी से देखती है। चित्रों का वर्णन बहुत अच्छा कर लेती है। अपने अच्छी तरह करती ही है, चित्रों के बारे में अतिरिक्त बातें भी अपने साथियों को बताती है। अपना नाम लिखना उसे बहुत अच्छा लगता है। छोटे-छोटे वाक्य

भी लिखने का प्रयास करती है। लेकिन अभी और भी मेहनत की ज़रूरत है। उसमें सृजनात्मक प्रतिभा है। वह छोटी-छोटी कहानियाँ लिख भी लेती है और बहुत अच्छे से सुनाती भी है। कहानी के साथ में वह कहानी से संबंधित चित्र भी बहुत सुंदर बनाती है।

प्रत्येक बच्चे के सीखने का इस प्रकार का ब्यौरा रखने से सत्र के अंत में उनके रिपोर्ट कार्ड बनाने में मदद मिलेगी।

❑❑❑